उपसंहार

पिछले कुछ दशकों में भारत में जिस तरह से आर्थिक तथा तकनीकी क्षेत्र में जो विकास किया है उससे संसार भर के देशों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है। आज संसार के लगभग सभी देश भारत से सामाजिक,सांस्कृतिक, और आर्थिक संबंध बनाने का प्रयास कर रहे हैं। ऐसे स्थिति में विदेशी भाषाओं के पाठ्यक्रमों के अधिगम के प्रति विद्यार्थियों का रुझान बढ़ रहा है। आज भारत देश के शैक्षिक संस्थानों और विश्वविद्यालयों में विदेशी भाषाओं पाठ्यक्रमों का अध्ययन-अध्यापन बढ़ता जा रहा है। भारत में विदेशी भाषा सीखने वालें विद्यार्थियों की संख्या में पिछले कुछ वर्षों में काफी वृद्धि हुई है। देश के प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों में विदेशी भाषा के रूप में जर्मन, स्पेनिश, चीनी, जापानी, फ्रेंच, अंग्रेज़ी, इटालियन, रूसी जैसे विश्व प्रसिद्ध विदेशी भाषाओं के पाठ्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। विदेशी भाषा के रूप में हिंदी भाषा का अध्ययन-अध्यापन के लिए भी विदेशी विदयार्थियों की संख्या भी बहुत तेज़ी से बढ़ती जा रही है। विदेशी विद्यार्थियों के लिए भी देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों में विदेशी भाषा के रूप में हिंदी भाषा के पाठ्यक्रम चलाए जा रहे हैं। भाषा सीखना एक जटिल कार्य होता है। विदेशी भाषा सीखने के लिए भाषा के चार मुख्य तत्व- कौशल बोलना, सुनना, पढ़ना और लिखना आदि में प्रवीणता अर्जित करनी होती है। विदेशी भाषा के अधिगम की प्रक्रिया में अनुवाद प्रक्रिया की अपनी एक अहम् महत्वपूर्ण और विशिष्ट भूमिका होती है। विदेशी भाषा सीखने में अनुवाद एक मुख्य प्रविधि के रूप कारगर भूमिका निभाता है और अनुवाद की सहायता से विदेशी भाषा सीखने में आसानी होती है। विदेशी भाषा सीखने के दौरान अनुवाद से संबंधित कार्य प्रशिक्षण करने से विद्यार्थी उस भाषा में निपुणता तो हासिल करता ही है इसके साथ-साथ वह भाषा उसके मस्तिष्क में ज़्यादा समय तक स्मरण रहती है। प्रस्तुत लघु-शोध कार्य इसी दिशा में किया गया एक छोटा सा प्रयास जो अनुवाद के क्षेत्र में विदेशी भाषा शिक्षण में अनुवाद की भूमिका को जानने में मददगार हो सकता है।

यह लघु-शोध कार्य साधनों और समय को ध्यान में रखते हुए तीन विश्वविद्यालय महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, अंग्रेज़ी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय और यूनिवर्सिटी ऑफ हैदराबाद, हैदराबाद, में पढ़ने वाले लगभग 60 ऐसे भारतीय और विदेशी विद्यार्थियों से संबंधित है जो विदेशी भाषा सीख रहे हैं या जो पहले से ही अपनी मातृभाषा से भिन्न किसी विदेशी भाषा को सीख चुके हैं। इस लघु-शोध कार्य के प्रारंभ में लघु-शोध कार्य के विषय के संबंध में उसके उद्देश्य महत्व, उपयोगिता तथा उसकी सीमाओं का उल्लेख किया गया है। यहाँ स्पष्ट किया गया है कि समय और साधनों को ध्यान में रखते हुए ही केवल तीन विश्वविद्यालयों के स्तर पर ही 'विदेशी भाषा पाठ्यक्रम में अधिगम अनुवाद की भूमिका' विषय को अध्ययन का विषय बनाया गया है।

प्रथम अध्याय में भाषा की अवधारणा, प्रकृति और स्वरूप को बताया गया है। इसके बाद मातृभाषा और अन्य भाषा की अवधारणा, विशिष्टताएँ और अंतर के बारे में चर्चा की गयी है। अंत में विदेशी भाषा शिक्षण का अधिगम और भाषा शिक्षण और अनुवाद के बीच संबंध को बताया गया है। इन विषयों पर चर्चा करने से यह पता चल पाया है कि, भाषा शिक्षण का सीधा संबंध एक ओर जहाँ भाषा से है वहीं दूसरी ओर मानव-मस्तिष्क और मानव-

व्यवहार से भी होता है। यहाँ सीखने वाली वस्तु भाषा है और सीखने और सिखाने वाले दोनों मनुष्य ही है। भाषा एक अत्यंत व्यवस्थित और बोधगम्य व्यवस्था होती है। भाषा चाहे किसी भी देश की हो उसकी अपनी अलग विशिष्ट व्यवस्था होती है। विदेशी भाषा को सीखने से पहले व्यक्ति को अपनी मातृभाषा में दक्षता हासिल होनी चाहिए। अगर व्यक्ति किसी एक भाषा को अच्छी तरह जानता है तो उसको दूसरी भाषा सीखने में सहायता मिलती है। जब विद्यार्थी विदेशी भाषा सीख रहा होता है तो वह अपनी मातृभाषा को पहले से ज़्यादा गहराई और अलग-अलग नज़रिये से देख और समझ पाता है। भाषा शिक्षण में अनुवाद की एक महवपूर्ण भूमिका होती है। विदेशी भाषा सीखते समय अनुवाद कार्यों का प्रशिक्षण करने अन्य भाषा सीखने में सहायता मिलती है। इनके द्वारा ही भाषा और भाषा शिक्षण के संबंध तथा भाषा शिक्षण और अनुवाद के बीच के संबंध का विवरण प्रस्तुत किया गया है।

दूसरे अध्याय में विदेशी भाषा पाठ्यक्रम के परिचय और अध्ययन का विवरण दिया गया है। विदेशी भाषा पाठ्यक्रम देश के कौन-कौनसे प्रसिद्ध विश्वविद्यालयों में अध्ययन-अध्यापन हो रहा है इसकी सूची दी गई है। इस अध्याय में विदेशी भाषा पाठ्यक्रम के अध्ययन में अनुवाद की भूमिका को दर्शाने का प्रयास भी किया है। अत विदेशी भाषा अध्ययन-अध्यापन में अनुवाद एक बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। प्रस्तुत लघु-शोध कार्य से संबंधित विषय पर भारतीय और विदेशी विद्यार्थियों से प्रश्नावली द्वारा प्राप्त सामग्री (डेटा) से भी विदेशी भाषा पाठ्यक्रमों के अधिगम में अनुवाद की भूमिका, महत्व और उपयोगिता को उजागर किया गया है। विदेशी भाषा शिक्षण की प्रक्रिया में अनुवाद की प्रक्रिया को संप्रेषण तथा बोधन की प्रक्रिया माना जाता है। भाषा अध्ययन की व्यापक दृष्टि से विदेशी भाषा सीखना अनुवाद सीखना ही माना जा सकता है। अंतत विदेशी भाषा के सफल अधिगम द्वारा विदेशी भाषा में रोज़गार की अपार संभावनाएँ हैं। विदेशी भाषा में दक्षता विद्यार्थी को अनुवाद के क्षेत्र में अनुवादक और निर्वचक (दुभाषिया) के रूप में बेहतरीन कैरियर और रोज़गार के अवसर मुहैया करवा रही है। इसलिए यह कहना सही होगा कि विदेशी भाषा के अध्ययन में अनुवाद एक महत्वपूर्ण और कारगर भूमिका निभाता है , चाहे वह ज्ञान अर्जन, दूसरी भाषा में दक्षता या फिर अनुवाद के क्षेत्र में विदेशी भाषा के विशेषज्ञ बनकर रोज़गार की बात हो।

तीसरे अध्याय में विद्यार्थियों द्वारा डेटा सामग्री संकलन का विश्लेषण किया गया है। लघु-शोध विषय 'विदेशी भाषा पाठ्यक्रम में अधिगम अनुवाद की भूमिका' से संबंधित प्रश्नावली का निर्माण किया गया है जिसको लगभग 60 विदेशी और भारतीय विद्यार्थी उत्तरदाताओं से भरवा कर डेटा का विश्लेषण किया गया है। सामग्री संकलन से जो डेटा प्राप्त हुआ है उसका विवरण ग्राफ़ बनाकर प्रस्तुत किया गया। प्राप्त डेटा के अनुसार 59%विदेशी विद्यार्थियों की अपेक्षा में 41% भारतीय छात्रों को विदेशी भाषा सीखने में अनुवाद उपयोगी लगता है। जबकि विदेशी भाषा सीखने वाले 46% भारतीय विद्यार्थी और 54% विदेशी छात्रों को विदेशी भाषा के प्रशिक्षण में अनुवाद सहायता करता है। वहीं 60% विदेशी विद्यार्थियों और 40% भारतीय विद्यार्थी यह मानते ही कि विदेशी भाषा के अध्ययन में अनुवाद प्रविधि का प्रयोग होना चाहिए। प्राप्त डेटा से यह भी पता लग पाया है कि विदेशी भाषा के रूप में विदेशी और भारतीय विद्यार्थियों का रुझान स्पेनिश, फ्रेंच, अंग्रेज़ी, अरबी, हिंदी, जापानी, चीनी, अंग्रेज़ी, जर्मन आदि भाषाओं की ओर

अधिक है। अंतत भारतीय छात्रों की अपेक्षा में विदेशी छात्र ज़्यादा विदेशी भाषाएँ सीखने के प्रति रूचि दिखाते हैं और विदेशी भाषा सीखने में भारतीय छात्रों की अपेक्षा में विदेशी छात्र ही अनुवाद को सहायक और उपयोगी मानते हैं।

कुल मिलाकर निष्कर्ष के रूप में यह कहा जा सकता है कि आज वैश्वीकरण और आधुनिकीकरण के दौर में अनुवाद ज्ञान-विज्ञान के हर क्षेत्र में महत्वपूर्ण और अहम् भूमिका निभा रहा है, आज संसार में ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जो अनुवाद से अछूता रहा हो। अनुवाद करने के लिए व्यक्ति को मातृभाषा के साथ दूसरी भाषा अर्थात विदेशी भाषा में दक्षता हासिल होनी चाहिए। विदेशी भाषा सीखने से ज्ञान अर्जन के साथ-साथ आज विश्वभर में कैरियर और रोज़गार भी व्यापक अवसर मौजूद है। इन सभी विषयों पर चर्चा करके यह कहना उचित होगा कि, विदेशी भाषा के अध्ययन में अनुवाद की एक महत्वपूर्ण और विशिष्ट भूमिका है जिसकी सहायता से विद्यार्थी अन्य भाषा के शिक्षण में अनुवाद का प्रयोग करके विदेशी भाषा को सुदृढ़ और बेहतर तरीके से सीख कर विदेशी भाषा में प्रवीणता अर्जित कर सकता है।